ज) अन्त में आधुनिकीकरण की प्रक्रिया सामाजिक प्रगति के विचार पर बल देती है तथा लोकतांत्रिक तरीकों से समाजों के लिए व्यैक्तिक और सामाजिक मुक्ति के बेहतर स्तर को प्राप्त करना सम्भव है।

2.5 आधुनिकीकरण के परिप्रेक्ष्य

समाज शास्त्र के दृष्टिकोण से आधुनिकीकरण ने खूब लेखन करवाया है। आधुनिकीकरण पर कोई एकीकृत परिप्रेक्ष्य नहीं है। हम निम्नलिखित परिप्रेक्ष्यों का परीक्षण करेंगे।

a) आदर्शवादी (The Ideal Typical)

b) प्रसारवादी (The Diffusionist)

c) मनोवैज्ञानिक (The Psychological)

d) मार्क्सवादी (The Marxist)

पहले तीन परिप्रेक्ष्यों का अमेरिकी चिन्तन में प्रभुत्व रहा है और इन्हें सभी जगह भरपूर समर्थन एवं संरक्षण मिला विशेषत: 1950 और 1960 के दशकों में। चौथे परिप्रेक्ष्य अर्थात मार्क्सवादी परिप्रेक्ष्य के तीनों परिप्रेक्ष्यों के लिए चुनौती के रूप में उभरा और उनके मुख्य विद्धान्तों का आलोचनात्मक परीक्षण किया।

आदर्शवादी परिप्रेक्ष्य

यह दृष्टिकोण दो मुख्य परिप्रेक्ष्यों में अभिव्यक्त हुआ है।

क) ढाँचागत परिवर्ती परिप्रेक्ष्य

ख) ऐतिहासिक अवस्था परिप्रेक्ष्य

ढाँचागत परिवर्ती परिप्रेक्ष्य

इस परिप्रेक्ष्य को मैक्स वेबर के 'आदर्श प्रकार' के सिद्धान्त से निरूपित किया गया है जिसे बाद में टालकर पारसन ने व्यवस्थित किया। इस परिप्रेक्ष्य के अनुसार विकास और अल्प विकास के लक्षणों की पहचान की जाए और तब विकास के कार्यक्रम एवं योजनायें बनानी चाहिएं जहाँ अल्प विकसित देश अल्प विकास के ढाँचागत परिवर्तों को नकार कर विकास के परिवर्त को अपनाते हैं।

टालकर पारसनस के काम से प्रेरित होकर स्मेल्सर (Smelser) ने स्पष्ट किया कि आधुनिकीकरण की प्रक्रिया चार उप प्रक्रियाओं से बनती है – जो इस प्रकार हैं:

क) प्रौद्योगिकी की आधुनिकीकरण, जो साधारण परम्परागत तकनीक के स्थान पर वैज्ञानिक जानकारियों के प्रयोग की ओर ले जाती है।

ख) कृषि का व्यवसायीकरण, जिसमें जीविकोपार्जन के बजाय व्यवसायिक कृषि की विशेषताएँ होती हैं जो नकदी फसलों के उत्पादन की विशेषज्ञता तथा वैतनिक मज़दूरी के बढ़ावे की ओर ले जाता है।

औद्योगीकरण: जो मानवीय और पशु शक्ति के स्थान पर मशीनी शक्ति के प्रयोग को अपनाने को प्रदर्शित करता है।

शहरीकरण: जो लोगों का खेतों और गांवों से बड़े शहरों की ओर पलायन को इंगित करता है। यह प्रक्रियाएँ कभी-कभी एक साथ और कभी-कभी अलग-अलग समय पर चलती रहती हैं। उदाहरण के लिए कई औपनिवेशिक स्थितियों में औद्योगिकीकरण के बिना ही कृषि का व्यवसायीकरण हो जाता है। नि:सन्देह यह चारों प्रक्रियाएँ परम्परागत समाज की संरचना को समान ढंग से प्रभावित करती हैं।